खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार अंकुरण के पूर्व खरपतवार नाशक दवा का प्रयोग किया जाता है । इसके बाद रोपण के 45 दिन पश्चात हाथ से निदाई करनी चाहिये । इसके पश्चात प्रथम वर्ष में दो बार निदाई तथा गुडाई करनी चाहिये । इससे खेत खरपतवार मुक्त होता है ।

कटाई (विदोहन)

सफेद मूसली के मूल प्रकंद 3 से 4 माह में परिपक्व हो कर विदोहन योग्य हो जाते है । नवम्बर से जनवरी इनका उचित विदोहन काल है । पौधे के मूल प्रकंद को कुदाल की मदद से सावधानीपूर्वक बगैर पौधे को क्षति पहुंचाये उखाड़ लेना चाहिये । सामान्यत: मूल प्रकंद से एक से अधिक जड़े गुच्छे के रुप होती है इनमे से विक्रय योग्य मोटी जड़ो को काट कर निकाल लेना चाहिये तथा पतली जड़ो को पौधे मे लगा रहने देते हैं और पौधे को पुन: जड़ो सहित मिट्टी में दवा देते देते हैं । ये जड़े अगले वर्ष तक विदोहन योग्य हो जाती है ।

कटाई उपरांत प्रबंधन

विदोहित जड़ों को पानी से धोकर मिट्टी तथा अन्य अशुध्दियों को निकाल कर साफ कर लेते हैं । उसके पश्चात् जड़ों का ऊपरी छिलका चाकू की मदद् से छील लिया जाता है अथवा मशीन से भी छिलाई की जा सकती है । तत्पश्चात इन्हें छाया में 15-20 दिन तक सुखाने के बाद साफ बोरों में भरा जाता है । सुरक्षित भंडारण हेतु बोरों को लकड़ी के पल्लों पर रखना चाहिये ।

उपज एवं लागत

3 से 4 माह पश्चात सफेद मुसली की शुष्क जड़ों का उत्पादन 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है ।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियों, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिए ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें ।
- यह ऐप एंड्राइड मोबाईल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है ।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधी पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
पौध कार्यिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726
ई-मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com वेब : https://www.rcfccentral.org

सफेद मूसली

(Chlorophytum borivilianum L.)

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक, यूनानी, सिध्दा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

सफेद मूसली

(Chlorophytum borivilianum L.)

कुल	:	लिलीयेसी (Liliaceae)
हिन्दी नाम	:	सफेद मूसली, विषकंदरी
अंगेजी एवं व्यापारिका नाम	:	Indian Spider Plant
आयुर्वेदिक नाम	:	मूलसीभेद
उपयोगी भाग	:	कंदिल जड़, प्रकंदीय मूल

सफेद मूसली बहुवर्षीय शाकीय पादप है । यह पौधा पूर्वी भारत में तथा मुख्य रुप से बंगाल, सिक्किम, बिहार, झारखंड, असम, मेघालय तथा ओडिसा राज्यों में छितरे रुपर में पाया जाता है । मध्य भारत में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों के वनों मे भी कहीं-कहीं ये पौधा पाया जाता है ।

आकारिकी

इस पौधे की जड़े छोटी एवं मांसल होती हैं । ये जड़े प्राय: मोटी, गूदेदार एवं बेलनाकार होती हैं । पत्तियाँ 15 से 35 से.मी. लम्बी एवं तिरछी भालेनुमा आकार की होती हैं । देश के प्राकृतिक वनों में यह प्रजाति लुप्तप्राय मानी जाती हैं ।

पुष्पीय अभिलक्षण

इस प्रजाति में पुष्पक्रम (inflorescence) असीमाक्षी (Racemose) होता है । पुष्प एक गुच्छे के रुप में व्यवस्थित होते हैं एवं यह गुच्छा शीघ्र शाखाओं में विभक्त हो जाता है । पुष्प श्वेत रंग के होते हैं । परागकोष (anther) पीत वर्ण के होते हैं तथा ये परागकोषधारी तंतुओ (filaments) के बराबर अथवा उनसे भी लंबे हो सकते हैं । सहपत्र (bracts) सामान्यत: लंबे होते हैं । फल गोलाकार कैप्सूल होते हैं तथा फल 3 (cells) में विभक्त होते हैं सामान्यत: प्रत्येक प्रकोष्ठ में 2 बीज होते हैं ।

रासायनिक घटक

सफेद मूसली की जड़ो में सेपोनिन एवं सेपोजेनिन स्टेरॉइड्स पाये जाते हैं । इसके अलावा इनमें स्टार्च तथा अन्य कार्बोहाइड्रेट्स, शर्करा, मैग्नीशियम तथा पोटेशियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में रहते हैं ।

औषधीय उपयोग

औषधीय गुण युक्त सफेद मूसली के प्रकन्दो का उपयोग सामान्य शक्तिवर्धक के रुप में होता है । इसमें सेपोजेनिन स्टेराइड के अलावा भरपूर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स तथा कैल्शियम भी होता हैं । कंद में उच्च कामोद्दीपक एवं शुक्रजनक गुण होता है। यह गुर्दे की पथरी, ल्युकोमिया तथा मधुमेह में भी उपयोगी है ।

कृषि तकनीक

सफेद मूसली बीजों से अच्छी किस्म की पौध सामग्री प्राप्त हो सकती हैं । अनुपचारित बीजों का अंकुरण प्रतिशत काफी कम (लगभग 9-12 प्रतिशत) होता है । परंतु सांद्र गंधकाम्ल से उपचारण के पश्चात जिबरेलिक एसिड (GA) के 100 ppm के सांद्रता घोल में उपचारण से बीजों का अंकुरण अच्छा होता है ।

नर्सरी तकनीक

नर्सरी में उठी हुई (raised) क्यारियों में सफेद मूसली का बीज मार्च माह में 10 से.मी. अंतराल पर पंक्तियों में बोना चाहिए । गर्मी के मौसम में बारम्बार सिंचाई आवश्यक है । मई जून तक पौधे प्रतिरोपण योग्य हो जाते हैं ।

बीजू पौध की बजाय जड़ युक्त प्रकंदो को पौध सामग्री की तरह प्रयोग किया जा सकता है । इस हेतु प्रति हेक्टेयर रोपण हेतु 8-10 क्विटंल जड़ों की आवश्यकता होगी । जड़ों से तैयार पौधों की रोपण सफलता बीजू पौधों की तुलना में अधिक होती है तथा उत्पादन ज्यादा होता है ।

सफेद मूसली के रोपण के पूर्व क्षेत्र तैयारी आवश्यक है । इसके लिए खेत की भलीभांती जुताई के पश्चात उस पर दो-तीन बार पाटा चला देना चाहिये ताकि मिट्टी के ढ़ेले फूटकर मिट्टी भुरभुरी हो जाये । क्षेत्र तैयारी के समय ही मिट्टी में प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर खाद या अन्य जैविक खाद मिला देनी चाहिए । रासायनिक उर्वरक NPK की 75:30:30 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर मात्रा भी दी जानी चाहिए। इनसे नाइट्रोजन (N) दो बार में दी जाये । नाइट्रोजन (N), फास्फोरस (P) तथा पोटाश (K) की एक साथ 30:30:30 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर क्षेत्र तैयारी के समय ही दी जा सकती है । नाइट्रोजन की दूसरी खुराक 45 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रोपण के 1 माह पश्चात् दी जानी चाहिए ।

मृदा उपचार

कई बार मृदा में खनिज तत्वों की कमी से रोपण की वृध्दि दर प्रभावित होती है अत: रोपण के पूर्व मृदा परीक्षण करा लेना चालिये तथा तदानुसार मृदा उपचार किया जाना चाहिये ।

रोपण

वर्षा ऋतु के प्रारंभ में ही सफेद मूसली के पौधों का खेत में रोपण कर देना चाहिये । रोपण अंतराल 60 से.मी. x 30 से.मी. रखना चाहिये ।